



लॉरियल के बाद पुस्तकालय

लॉरियल के अनुभव से मैं समझ गया कि मैं एक जिलेट फ़ॉर्मेट के भीतर जीता आया था, और वह असली बाज़ार जैसा नहीं था — और अगर मैं कभी खुद को कॉरपोरेट दायरे के बाहर पाता, तो दुनिया का सामना करने के लिए बिलकुल तैयार न होता।

मेरे पिता ने फ़ोन किया और मुझे दोपहर के खाने पर बुलाया — घर पर नहीं, हम बाहर मिलेंगे, जैसे बस काम की बात हो, जबकि असल में हम अपना सबसे अच्छा वक़्त साथ बिता रहे थे, बाप-बेटा एक-दूसरे को फिर से पाते हुए। मुझे उनकी कमी खलती है।

वे जानना चाहते थे कि इस पेशेवर अनुभव के बाद मुझे कैसा लग रहा है — उन्हें ब्योरे या बारीकियाँ नहीं चाहिए थीं, वे हमेशा से अपने में रहने वाले आदमी थे, कभी पूछते नहीं थे, बस सुनते और मुस्कुराते थे।

मैंने उन्हें बताया था कि मैं पढ़ना चाहता हूँ — स्कूल या यूनिवर्सिटी के रास्ते नहीं, बल्कि पुस्तकालय में जाकर, दिन-ब-दिन, यह खोजते हुए कि किताबों के पास कहने को क्या है।

वे इससे खुश हुए और बोले: ज्ञान सिर्फ़ तजुर्बे से नहीं आता — याद रखना, इतिहास हमेशा खुद को दोहराता है, वही चक्र बार-बार, बस उसे एक बार पढ़ना है और समझ लेना है कि वह चलता कैसे है।

कम शब्द, कोई नाटकबाज़ी नहीं — आज यह मेरे होने का भी हिस्सा है। व्यंग्य मुझे माँ से मिला है, वह गुण जो असल में मेरे नाना से विरासत में आया।

पर मुझे अपनी भाषा हमेशा उसके हिसाब से ढालनी होगी जिससे मैं बात कर रहा हूँ, क्योंकि कोई पेचीदा शब्द अक्सर ज्ञान की निशानी बिलकुल नहीं होता — वह बस आपको ऐसा जाहिल गधा बना देता है जिसे खाक पता नहीं कि वह क्या बक रहा है।

मैंने सोचा कि मिलान जाकर काइज़र के मैनेजमेंट कोर्स में दाखिला ले लूँ, पर वे 3,760,000 लीरा माँग रहे थे, और पाठ्यक्रम पूरा पढ़ लेने के बाद मुझे यकीन नहीं हुआ कि यह निवेश के लायक है।

मैं दूसरों के ज्ञान के सामने खुद को परखना चाहता था, और मुझे मिल गया कि क्या करना है: एक मर्चेडाइज़र कोर्स, जहाँ मैं जो कुछ व्यवहार में पहले से करता था, उसे सिद्धांत की ज़मीन देकर निखार और सुधार सकता था।

मैंने हफ़्ते में बीस घंटे की कक्षाओं के लिए 650,000 लीरा चुकाए — पर वह कैसा रहा, यह मैं अगली कड़ी में बताऊँगा।

बस एक ख़याल: उन दिनों भी मुझे आभास था कि मेरे भीतर कुछ है जो ठीक काम नहीं कर रहा, या शायद बिलकुल ठीक काम कर रहा है, पर मैं पहचान नहीं पाता था कि वह क्या है। बाद में, लिखने ने ही सब साफ़ कर दिया।

मैं ऐसा शख्स था जिसके होने की किसी को उम्मीद नहीं थी — और फिर भी, मैं कोई तो था।

फर्दिनांदो